पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों के आधार से ही परिवार तथा समाज का सुखद बदलाव सम्भव है:

लाईफ पाजिटिव मैगेजिन के सहायक सम्पादक अजयमिश्र का सवाल तथा बह्माकुमारीज संस्थ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी के आध्यात्मिक समाधान

प्रश्नः 1

उत्तरः इस सृष्टि के आदि में पारिवारिक मूल्यों के कारण कोई भी भेद नहीं था। जब मनुष्य को आत्मिक ज्ञान और ईश्वर का सानिध्य होता है तो उसके सामने ऊंच-नीच का भाव समाप्त हो जाता है। वसुधैव कुटुम्बकम, आपसी भाईचारे की प्रवृत्ति मनुष्य को एकता के सूत्र में बांधे रखती है। आज प्रेम और सौहार्द्र का दायरा सीमित हो गया है। इसलिए हर घर बिखर रहा है। आत्मिक ज्ञान और आध्यात्मिकता की शक्ति परिवार ही नही बल्कि किसी भी संगठन को चलाने में शक्ति प्रदान करती है। इसलिए इस संस्थान में हर धर्म और हर सम्प्रदाय के लोग है। तथा दिनोंदिन यह संस्था अपनी उन्नति को पाती जा रही है।

प्रश्नः 2

उत्तर-इस संस्थान की ऐसी उपलब्धियों को प्राप्त किया है, जिसको प्राप्त करने के लिए लोग एड़ी से चोटी का जोर लगाने पर सम्भव नहीं हो पा रहा है। मैं तो जब से इस संस्था से जुड़ी हूँ, मुझे अपने आप पर पूरा नियंत्रण है। जो मैं सोचना चाहती हूँ, करना चाहती हूँ वही होता है। आज लाखों लोग इस संस्था से जुड़कर अपने जीवन में दैवी गुणों को आत्मसात कर पूरी सृष्टि को परिवर्तन करने का महान कार्य कर रहे हैं।

प्रश्नः3

उत्तर- सतयुग लाने का संकल्प हमारा नहीं बल्कि यह परमात्मा शिव का मिशन है। क्योंकि अंधकार के बाद सुबह अटल सत्य है। आज पूरी दुनियां में अत्याचार और पापाचार है। इसको बदलने के लिए तथा कलयुग के बाद सतयुग लाना परमात्मा का कार्य है। वह करा रहा है, और हम सभी मिलकर कर रहे है। 73 वर्ष पूर्व परमात्मा शिव ने जो आध्यात्मिक क्रान्ति का बीज बोया था वह आज विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। निश्चित ही एक दिन हमारा भारत सोने की चिड़ियां बनेगा।

प्रश्नः 4

उत्तर-सच कहूँ तो, मैं ही नहीं बल्कि संसार का हर एक व्यक्ति यदि अपने को व्यक्तिगत स्तर से उपर उठकर देखेगा तो उसे यही मिलेगा कि आज पूरी दुनियां में आसुरी सम्राज्य स्थापित हो गया है। मानवता और मानवीय मूल्य इस दुनियां से समाप्त हो गयी है। चारो तरफ आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अत्याचार अपनी चरम पर है। यह अन्त की निशानी है। इसलिए परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर नयी दुनियां की स्थापना का महान कार्य करा रहे हैं।

प्रश्नः5

उत्तर- वास्तव में भारत प्राचीन काल से ही आध्यात्मिकता तथा ईश्वरीय सत्ता के मामले में विश्व गुरू की उपाधि से नवाजा जाता रहा है। आध्यात्मिकता में परिपक्वता के कारण एक धर्म, एक भाषा तथा एक राजनीति थी। परन्तु अब नहीं है। भौतिकता की चकाचौंध ने मनुष्य को आध्यात्मिकता से दूर कर दिया है। अनेक धर्मों ने मतभेद पैदा किये है जिससे कई समस्यायें सामने आयी है। भक्ति तमोप्रधान हो गयी है।

इसलिए तो परमात्मा को इस सृष्टि पर अवतरित होना पड़ा। फिर से वे नयी दुनियां की स्थापना करा रहे हैं।

प्रश्न: 6

उत्तर- अन्धकार के बाद प्रकाश तथा रात्रि के बाद सुबह होना यह प्रकृति का अटल सत्य नियम है। जब मनुष्य की आन्तरिक शक्ति समाप्त हो जाती है तब वह बाहरी शक्ति का इस्तेमाल करता है। जिसके लिए अनेक भौतिक साधनों की खोज होती है। परन्तु इसमें आध्यात्मिकता न होने के कारण सुख के बदले दुख दे रही है। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग के बाद पुनः सतयुग आना एक ईश्वरीय नियम है। सतयुग की योजना हमारी नहीं बल्कि सर्वआत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव की है। जो हो रहा है।

प्रश्न:7

उत्तर-ब्रह्माकुमारी संस्था का कोई अपना दर्शन नहीं है। यह तो परमात्मा शिव द्वारा दिया गया आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग की शिक्षा है। जिसको अपने जीवन में उतारने से मनुष्य नर से नारायण तथा नारी से लक्ष्मी तुल्य बनता है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की धारणा से व्यक्ति और समाज का बदलाव होता है। भारत का प्राचीन धर्म आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है।

प्रश्न:8

उत्तर- जब से ईश्वर ने हमें अपना बनाया है। तब से जो शिवबाबा की आज्ञा मिलती है उसे अपने जीवन में उतारते है। ईश्वर हमें चलाता है और हमारा ध्यान रखता है। हमारा कोई भी संकल्प व्यर्थ नहीं जाता है। हमे अंग्रेजी नहीं आती थी फिर भी बाबा ने हमें विदेश में भेजा और वहाँ पर ईश्वरीय सेवाओं का विस्तार हुआ है।

प्रश्न: 9

उत्तर- हमारी कोई अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है हम तो परमात्मा के इशारे से कार्य करते हैं। जैसा परमात्मा से हमें निर्देश मिलता है, हम उसपर चलने की पूरी कोशिश करते हैं। कोई भी व्यक्ति जब किसी की आज्ञा का पालन करेगा तो निश्चित ही लोग उससे खुश और संतुष्ट होंगे। बाबा के आदेशानुसार हम चलते है तभी तो हमें इतनी बड़ी जिम्मेदारी दी है। यह उसके संतुष्टता का ही तो प्रमाण है।

प्रश्न:10

उत्तर- सफलतापूर्वक जीवन जीने के लिए व्यक्ति को दूसरों का नेतृत्व करने से पहले स्वयं का नेतृत्व करना सीखना चाहिए। मनुष्य के साथ से तो कभी धोखा भी मिल सकता है। परन्तु ईश्वर के साथ से कभी भी धोखा नहीं होगा और हर परिस्थितियों में वह आपके साथ होगा। अपने जीवन की स्वस्थ दिनचर्या बनायें। मन-वचन-कर्म से कोई भी बुरा कार्य न हो इसका ध्यान रखें। कार्य करने से पहले ईश्वर का ध्यान करें तथा उसके परिणामों की चिन्ता न करें। सफलता आपकी कदम चूमेगी।

प्रश्न:11

उत्तर-आज चारो तरफ श्रेष्ठ चरित्र का अभाव होता जा रहा है। भौतिकता के हवाई संसार में भी लोग सच्चे सुख शान्ति की तलाश कर रहे है। मानव का व्यवहार दानव से भी बदतर हो गया है। हम यही चाहते है कि परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर जो महान कार्य करा रहे है सभी मनुष्यात्माओं को इसका संदेश मिल जाये। जैसे हम अपने जीवन को श्रेष्ठ बना रहे है वैसे ही सभी लोग अपने जीवन को परमात्मा

के मत पर चलकर श्रेष्ठ बनायें।

प्रश्न:12

उत्तर- मुझे नहीं लगता कि मैं 90 साल की हूँ। ईश्वरीय शक्ति हमें चलाती है। हमारी देखभाल स्वयं परमात्मा करता है। मैं उसका ध्यान करती हूँ तो वह हमारा ध्यान रखता है। वैसे भी सभी शक्तियों में आध्यात्मिक शक्ति श्रेष्ठ है।

प्रश्न: 13

उत्तर- आज युवा पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति से बुरी तरह प्रभावित हो रही है। संस्कार समाप्त होते जा रहे हैं। आज पूरे विश्व को परिवर्तन करने के लिए परमात्मा को युवाओं की बहुत आवश्यकता है। आज हमारी संस्था में लाखों ऐसे युवा है जो अपने जीवन को समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत कर रहे है। मन-वचन-कर्म से दुनियां बदलने में दिन-रात लगे हुए हैं।

प्रश्न: 14

उत्तर-लाईफ पाजिटिव मैगेजिन के सम्पादक सहित पूरी टीम को दिल से धन्यवाद देती हूँ कि जहाँ एक ओर प्रतिस्पर्धा की दौड़ में आध्यात्मिकता खोती जा रही है। वहीं लाईफ पाजिटिव मैगेजिन लोगों के सकारात्मक जीवन शैली से पूरे समाज को एकता के सूत्र में बांधने का सराहनीय प्रयास कर रही है। दिनों दिन यह प्रक्रिया बढ़ती रहे इसके लिए शुभकामना करती हूँ।